

سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ

Surah 14 — Ibrahim (Abraham) · Meccan · 52 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى
النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

अलिफ़ लाम रा ऐ रसूल ये (कुरान वह) किताब है जिसको हमने तुम्हारे पास इसलिए नाज़िल किया है कि तुम लोगों को
परवरदिगार के हुक्म से (कुफ़र की) तारीकी से (ईमान की) रौशनी में निकाल लाओ गरज़ उसकी राह पर लाओ जो सब पर
गालिब और सज़ावार हम्द है

2

اللَّهُ الَّذِي لَهُ ۝ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۝ وَوَيْلٌ ۝ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ
شَدِيدٍ

वह खुदा को कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है और (आखिरत में) काफ़िरों को लिए जो
सख्त अज़ाब (मुहय्या किया गया) है अफसोस नाक है

3

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا
عُوجًا ۝ أَوْ لَكَ فِي ضَلَلٍ ۝ بَعِيدٍ

वह कुफ़र जो दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी को आखिरत पर तरजीह देते हैं और (लोगों) को खुदा की राह (पर चलने) से
रोकते हैं और इसमें ख्वाह मा ख्वाह कज़ी पैदा करना चाहते हैं यही लोग बड़े पल्ले दर्जे की गुमराही में हैं

4

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ ۝ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۝ فَيُضِلُّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۝ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और हमने जब कभी कोई पैगम्बर भेजा तो उसकी क़ौम की ज़बान में बातें करता हुआ (ताकि उसके सामने (हमारे एहक़ाम)
बयान कर सके तो यही खुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है और जिस की चाहता है हिदायत करता है वही सब पर
गालिब हिकमत वाला है

5

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۚ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۚ

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा (और ये हुक्म दिया) कि अपनी क़ौम को (कुफ़्र की) तारिकियों से (ईमान की) रौशनी में निकाल लाओ और उन्हें खुदा के (वह) दिन याद दिलाओ (जिनमें खुदा की बड़ी बड़ी कुदरतें ज़ाहिर हुई) इसमें शक़ नहीं इसमें तमाम सब्र शुक्र करने वालों के वास्ते (कुदरतें खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

6

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا ۚ نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ عَالٍ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ ۚ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۚ

और वह (वक्त याद दिलाओ) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि खुदा ने जो एहसान तुम पर किए हैं उनको याद करो जब अकेले तुमको फिरऔन के लोगों (के ज़ुल्म) से नजात दी कि वह तुम को बहुत बड़े बड़े दुख दे के सताते थे तुम्हारा लड़कों को जबाह कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को (अपनी खिदमत के वास्ते) जिन्दा रहने देते थे और इसमें तुम्हारा परवरदिगार की तरफ से (तुम्हारा सब्र की) बड़ी (सख्त) आजमाइश थी

7

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ ۚ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۚ

और (वह वक्त याद दिलाओ) जब तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें जता दिया कि अगर (मेरा) शुक्र करोगें तो मैं यक़ीनन तुम पर (नेअमत की) ज्यादाती करूँगा और अगर कहीं तुमने नाशुकी की तो (याद रखो कि) यक़ीनन मेरा अज़ाब सख्त है

8

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرُوا ۚ أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ

और मूसा ने (अपनी क़ौम से) कह दिया कि अगर और (तुम्हारे साथ) जितने रूए ज़मीन पर हैं सब के सब (मिलकर भी खुदा की) नाशुकी करो तो खुदा (को ज़रा भी परवाह नहीं क्योंकि वह तो बिल्कुल) बे नियाज़ है

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا ۚ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ ۚ وَعَادٍ ۚ وَثَمُودَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ ۚ
 بَعْدِهِمْ ۚ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا ۚ أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ
 وَقَالُوا ۚ إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ ۚ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ ۚ مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۚ

और हम्द है क्या तुम्हारे पास उन लोगों की खबर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले थे (जैसे) नूह की कौम और आद व समूद और (दूसरे लोग) जो उनके बाद हुए (क्योंकर खबर होती) उनको खुदा के सिवा कोई जानता ही नहीं उनके पास उनके (वक्त के) पैगम्बर मौजिजे लेकर आए (और समझाने लगे) तो उन लोगों ने उन पैगम्बरों के हाथों को उनके मुँह पर उलटा मार दिया और कहने लगे कि जो (हुक्म लेकर) तुम खुदा की तरफ से भेजे गए हो हम तो उसको नहीं मानते और जिस (दीन) की तरफ तुम हमको बुलाते हो बड़े गहरे शक में पड़े हैं

ۚ قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللَّهِ شَكٌّ ۚ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ
 مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوا ۚ إِن أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا
 تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَآتُونَا بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ۚ

(तब) उनके पैगम्बरों ने (उनसे) कहा क्या तुम को खुदा के बारे में शक है जो सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला (और) वह तुमको अपनी तरफ बुलाता भी है तो इसलिए कि तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और एक वक्त मुकर्रर तक तुमको (दुनिया में चैन से) रहने दे वह लोग बोल उठे कि तुम भी बस हमारे ही से आदमी हो (अच्छा) अब समझे तुम ये चाहते हो कि जिन माबूदों की हमारे बाप दादा परसतिश करते थे तुम हमको उनसे बाज़ रखो अच्छा अगर तुम सच्चे हो तो कोई साफ खुला हुआ सरीही मौजिज़ा हमे ला दिखाओ

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ
 عِبَادِهِ ۚ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
 الْمُؤْمِنُونَ

उनके पैगम्बरों ने उनके जवाब में कहा कि इसमें शक नहीं कि हम भी तुम्हारे ही से आदमी हैं मगर खुदा अपने बन्दों में जिस पर चाहता है अपना फज़ल (व करम) करता है (और) रिसालत अता करता है और हमारे एख्तियार मे ये बात नहीं कि बे हुक्मे खुदा (तुम्हारी फरमाइश के मुवाफिक) हम कोई मौजिज़ा तुम्हारे सामने ला सकें और खुदा ही पर सब ईमानदारों को भरोसा रखना चाहिए

12

وَمَا لَنَا إِلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَى مَا آذَيْتُمُونَا ۚ
وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ

और हमें (आखिर) क्या है कि हम उस पर भरोसा न करें हालाँकि हमे (निजात की) आसान राहें दिखाई और जो तूने अज़ियतें हमें पहुँचाइ (उन पर हमने सब्र किया और आइन्दा भी सब्र करेंगे और तवक्कल भरोसा करने वालो को खुदा ही पर तवक्कल करना चाहिए

13

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ
فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ

और जिन लोगों ने कुफ़र एख्तियार किया था अपने (वक्त के) पैग़म्बरों से कहने लगे हम तो तुमको अपनी सरज़मीन से ज़रूर निकाल बाहर कर देंगे यहाँ तक कि तुम फिर हमारे मज़हब की तरफ पलट आओ-तो उनके परवरदिगार ने उनकी तरफ वही भेजी कि तुम घबराओ नहीं हम उन सरकश लोगों को ज़रूर बर्बाद करेंगे

14

وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ الْأَرْضَ مِنْ ۚ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ

और उनकी हलाकत के बाद ज़रूर तुम्ही को इस सरज़मीन में बसाएंगे ये (वायदा) महज़ उस शरूख से जो हमारी बारगाह में (आमाल की जवाब देही में) खड़े होने से डरे

15

وَأَسْتَفْتَحُوا ۚ وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۚ

और हमारे अज़ाब से खौफ खाए और उन पैग़म्बरों हम से अपनी फतेह की दुआ माँगी (आखिर वह पूरी हुई)

16

مِّنْ وَرَائِهِ ۚ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ ۚ صَدِيدٍ ۚ

और हर एक सरकश अदावत रखने वाला हलाक हुआ (ये तो उनकी सज़ा थी और उसके पीछे ही पीछे जहन्नुम है और उसमें) से पीप लहू भरा हुआ पानी पीने को दिया जाएगा

17

يَتَجَرَّعُهُ ۚ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ ۚ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ ۚ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۚ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۚ

(ज़बरदस्ती) उसे घूँट घूँट करके पीना पड़ेगा और उसे हलक़ से आसानी से न उतार सकेगा और (वह मुसीबत है कि) उसे हर तरफ़ से मौत ही मौत आती दिखाई देती है हालाँकि वह मारे न मर सकेगा-और फिर उसके पीछे अज़ाब सख्त होगा

18

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بَرِيهِمْ ۚ أَعْمَلُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ۚ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا ۚ عَلَى شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَلُ الْبَعِيدُ

जो लोग अपने परवरदिगार से काफिर हो बैठे हैं उनकी मसल ऐसी है कि उनकी कारस्तानियाँ गोया (राख का एक ढेर) है जिसे (अन्धड़ के रोज़ हवा का बड़े ज़ोरों का झोंका उड़ा लेगा जो कुछ उन लोगों ने (दुनिया में) किया कराया उसमें से कुछ भी उनके क़ाबू में न होगा यही तो पल्ले दर्जे की गुमराही है

19

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ ۚ جَدِيدٍ ۚ

क्या तूने नहीं देखा कि खुदा ही ने सारे आसमान व ज़मीन ज़रूर मसलहत से पैदा किए अगर वह चाहे तो सबको मिटाकर एक नई खिलक़त (बस्ती) ला बसाए

20

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۚ

औ ये खुदा पर कुछ भी दुशवार नहीं

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ؟ قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهْدَيْنُكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزَعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ؟

और (क़यामत के दिन) लोग सबके सब खुदा के सामने निकल खड़े होंगे जो लोग (दुनिया में कमज़ोर थे बड़ी इज्जत रखने वालों से (उस वक्त) कहेंगे कि हम तो बस तुम्हारे क़दम ब क़दम चलने वाले थे तो क्या (आज) तुम खुदा के अज़ाब से कुछ भी हमारे आड़े आ सकते हो वह जवाब देंगे काश खुदा हमारी हिदायत करता तो हम भी तुम्हारी हिदायत करते हम ख्वाह बेकरारी करें ख्वाह सब करे (दोनों) हमारे लिए बराबर है (क्योंकि अज़ाब से) हमें तो अब छुटकारा नहीं

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تُلْهُمُونِي وَلُومُوا أَنْفُسَكُمْ مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ؟

और जब (लोगों का) ख़ैर फैसला हो चुकेगा (और लोग शैतान को इल्ज़ाम देंगे) तो शैतान कहेगा कि खुदा ने तुम से सच्चा वायदा किया था (तो वह पूरा हो गया) और मैंने भी वायदा तो किया था फिर मैंने वायदा खिलाफ़ी की और मुझे कुछ तुम पर हुकूमत तो थी नहीं मगर इतनी बात थी कि मैंने तुम को (बुरे कामों की तरफ) बुलाया और तुमने मेरा कहा मान लिया तो अब तुम मुझे बुरा (भला) न कहो बल्कि (अगर कहना है तो) अपने नफ्स को बुरा कहो (आज) न तो मैं तुम्हारी फरियाद को पहुँचा सकता हूँ और न तुम मेरी फरियाद कर सकते हो मैं तो उससे पहले ही बेज़ार हूँ कि तुमने मुझे (खुदा का) शरीक बनाया बेशक जो लोग नाफरमान हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

وَأَدْخِلَ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ

और जिन लोगों ने (सदक़ दिल से) ईमान कुबूल किया और अच्छे (अच्छे) काम किए वह (बेहशत के) उन बाग़ों में दाखिल किए जाएँगे जिनके नीचे नहरे जारी होगी और वह अपने परवरदिगार के हुक्म से हमेशा उसमें रहेंगे वहाँ उन (की मुलाक़ात) का तोहफ़ा सलाम का हो

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ كَلِمَةً ۙ طَيِّبَةً ۙ كَشَجَرَةٍ ۙ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ ۙ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ

(ऐ रसूल) क्या तुमने नहीं देखा कि खुदा ने अच्छी बात (मसलन कलमा तौहीद की) वैसी अच्छी मिसाल बयान की है कि (अच्छी बात) गोया एक पाकीजा दरख्त है कि उसकी जड़ मज़बूत है और उसकी टहनियाँ आसमान में लगी हो

تُؤْتِي أَكْلَهَا كُلَّ حِينٍ ۙ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۙ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक्त फ़ला (फूला) रहता है और खुदा लोगों के वास्ते (इसलिए) मिसालें बयान फरमाता है ताकि लोग नसीहत व इबरेत हासिल करें

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ ۖ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۙ

और गन्दी बात (जैसे कलमाए शिर्क) की मिसाल गोया एक गन्दे दरख्त की सी है (जिसकी जड़ ऐसी कमज़ोर हो) कि ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ फेंका जाए (क्योंकि) उसको कुछ ठहराओ तो है नहीं

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۙ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۙ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ

जो लोग पक्की बात (कलमा तौहीद) पर (सदक़ दिल से ईमान ला चुके उनको खुदा दुनिया की ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आखिरत में भी साबित क़दम रखेगा (और) उन्हें सवाल व जवाब में कोई वक्त न होगा और सरकशों को खुदा गुमराही में छोड़ देता है और खुदा जो चाहता है करता है

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا ۖ نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا ۙ وَأَحَلُّوا ۖ قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۙ

(ऐ रसूल) क्या तुमने उन लोगों के हाल पर ग़ौर नहीं किया जिन्होंने मेरे एहसान के बदले नाशुकी की एख्तियार की और अपनी क़ौम को हलाकत के घरवाहे (जहन्नुम) में झोंक दिया

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۙ وَيُسَّ الْقَرَارُ

कि सबके सब जहन्नुम वासिल होंगे और वह (क्या) बुरा ठिकाना है

وَجَعَلُوا ۚ لِلّٰهِ اُنْدَادًا ۚ لِّيُضِلُّوا ۚ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ ۚ قُلْ تَمَتَّعُوا ۚ ۚ فَاِنَّ مَصِيرَكُمْ اِلَى النَّارِ

और वह लोग दूसरो को खुदा का हमसर (बराबर) बनाने लगे ताकि (लोगों को) उसकी राह से बहका दे (ऐ रसूल) तुम कह दो कि (खैर चन्द रोज़ तो) चैन कर लो फिर तो तुम्हें दोज़ख की तरफ लौट कर जाना ही है

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ يُقِيمُوا ۚ الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوا ۚ مِمَّا رَزَقْنَهُمْ سِرًّا ۚ ۚ وَعَلَانِيَةً ۚ ۚ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاتِيَ يَوْمٌ ۚ ۚ لَا بَيْعٌ ۚ ۚ فِيْهِ وَلَا خِلَلٌ

(ऐ रसूल) मेरे वह बन्दे जो ईमान ला चुके उन से कह दो कि पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करें और जो कुछ हमने उन्हें रोज़ी दी है उसमें से (खुदा की राह में) छिपाकर या दिखा कर खर्च किया करे उस दिन (क्रियामत) के आने से पहल जिसमें न तो (खरीदो) फरोख्त ही (काम आएगी) न दोस्ती मोहब्बत काम (आएगी)

اللّٰهُ الَّذِى خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً ۚ ۚ فَاَخْرَجَ بِهٖ ۚ ۚ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا ۚ ۚ لَّكُمْ ۚ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ ۚ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ

खुदा ही ऐसा (क्रादिर तवाना) है जिसने सारे आसमान व ज़मीन पैदा कर डाले और आसमान से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिए से (मुख्तलिफ़ दरख्तों से) तुम्हारी रोज़ा के वास्ते (तरह तरह) के फल पैदा किए और तुम्हारे वास्ते कश्तियां तुम्हारे बस में कर दी-ताकि उसके हुक्म से दरिया में चलें और तुम्हारे वास्ते नदियों को तुम्हारे एख्तियार में कर दिया

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

और सूरज और चाँद को तुम्हारा ताबेदार बना दिया कि सदा फेरी किया करते हैं और रात और दिन को तुम्हारे क़ब्जे में कर दिया कि हमेशा हाज़िर रहते हैं

وَأَتَاكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ ۚ كَفَّارٌ ۚ

(और अपनी ज़रूरत के मुवाफिक) जो कुछ तुमने उससे माँगा उसमें से (तुम्हारी ज़रूरत भर) तुम्हे दिया और तुम खुदा की नेमतों गिनती करना चाहते हो तो गिन नहीं सकते हो तू बड़ा बे इन्साफ नाशुक्रा है

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا ۖ وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ

और (वह वक्त याद करो) जब इबराहीम ने (खुदा से) अर्ज की थी कि परवरदिगार इस शहर (मक्के) को अमन व अमान की जगह बना दे और मुझे और मेरी औलाद को इस बात को बचा ले कि बुतों की परसतिश करने लगे

رَبِّ إِنَّهُمْ أَضَلُّنَ كَثِيرًا ۖ مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۚ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

ऐ मेरे पालने वाले इसमें शक नहीं कि इन बुतों ने बहुतेरे लोगों को गुमराह बना छोड़ा तो जो शरूश मेरी पैरवी करे तो वह मुझ से है और जिसने मेरी नाफ़रमानी की (तो तुझे एख्तेयार है) तू तो बड़ा बरूशने वपला मेहरबान है)

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا ۚ الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً ۚ مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَأَرْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ

ऐ हमारे पालने वाले मैंने तेरे मुअज़िज़ (इज्जत वाले) घर (काबे) के पास एक बेखेती के (वीरान) बियाबान (मक्का) में अपनी कुछ औलाद को (लाकर) बसाया है ताकि ऐ हमारे पालने वाले ये लोग बराबर यहाँ नमाज़ पढ़ा करें तो तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ माएल कर (ताकि वह यहाँ आकर आबाद हों) और उन्हें तरह तरह के फलों से रोज़ी अता कर ताकि ये लोग (तेरा) शुक्र करें

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۚ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ

ऐ हमारे पालने वाले जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं तू (सबसे) खूब वाकिफ है और खुदा से तो कोई चीज़ छिपी नहीं (न) ज़मीन में और न आसमान में उस खुदा का (लाख लाख) शुक्र है

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ

जिसने मुझे बुढ़ापा आने पर इस्माईल व इसहाक़ (दो फरज़न्द) अता किए इसमें तो शक़ नहीं कि मेरा परवरदिगार दुआ का सुनने वाला है

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۚ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ

(ऐ मेरे पालने वाले मुझे और मेरी औलाद को (भी) नमाज़ का पाबन्द बना दे और ऐ मेरे पालने वाले मेरी दुआ कुबूल फरमा

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَلَدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

ऐ हमारे पालने वाले जिस दिन (आमाल का) हिसाब होने लगे मुझको और मेरे माँ बाप को और सारे ईमानदारों को तू बख़्श दे

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَفْلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ
الْأَبْصَارُ

और जो कुछ ये कुफ़ार (कुफ़ारे मक्का) किया करते हैं उनसे खुदा को गाफिल न समझना (और उन पर फौरन अज़ाब न करने की) सिर्फ़ ये वजह है कि उस दिन तक की मोहलत देता है जिस दिन लोगों की आँखों के ढेले (ख़ौफ़ के मारे) पथरा जाएँगे

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَأَفْذَتْهُمْ أَسْوَاقُهُمْ

(और अपने अपने सर उठाए भागे चले जा रहे हैं (टकटकी बँधी है कि) उनकी तरफ़ उनकी नज़र नहीं लौटती (जिधर देख रहे हैं) और उनके दिल हवा हवा हो रहे हैं

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ رَبَّنَا أَخِّرْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ ۖ قَرِيبٍ ۖ نُجِيبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ ۖ أَوَلَمْ تَكُونُوا ۖ أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ ۖ

और (ऐ रसूल) लोगों को उस दिन से डराओ (जिस दिन) उन पर अज़ाब नाज़िल होगा तो जिन लोगों ने नाफरमानी की थी (गिड़गिड़ा कर) अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे पालने वाले हम को थोड़ी सी मोहलत और दे दे (अबकी बार) हम तेरे बुलाने पर ज़रूर उठ खड़े होंगे और सब रसूलों की पैरवी करेंगे (तो उनको जवाब मिलेगा) क्या तुम वह लोग नहीं हो जो उसके पहले (उस पर) कसमें खाया करते थे कि तुम को किसी तरह का ज़व्वाल (नुक्सान) नहीं

وَسَكَنتُمْ فِي مَسْكَنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ أَنْفُسُهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُم كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ

(और क्या तुम वह लोग नहीं कि) जिन लोगों ने (हमारी नाफरमानी करके) आप अपने ऊपर जुल्म किया उन्हीं के घरों में तुम भी रहे हालाँकि तुम पर ये भी ज़ाहिर हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या (बरताओ) किया और हमने (तुम्हारे समझाने के वास्ते) मसले भी बयान कर दी थीं

وَقَدْ مَكَرُوا ۖ مَكَرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكَرُهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكَرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ

और वह लोग अपनी चालें चलते हैं (और कभी बाज़ न आए) हालाँकि उनकी सब हालतें खुदा की नज़र में थी और अगरचे उनकी मक्कारियाँ (उस गज़ब की) थीं कि उन से पहाड़ (अपनी जगह से) हट जाये

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ ۖ رُسُلُهُ ۖ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ۖ ذُو انْتِقَامٍ ۖ

तो तुम ये ख्याल (भी) न करना कि खुदा अपने रसूलों से खिलाफ वायदा करेगा इसमें शक नहीं कि खुदा (सबसे) ज़बरदस्त बदला लेने वाला है

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ ۖ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ

(मगर कब) जिस दिन ये ज़मीन बदलकर दूसरी ज़मीन कर दी जाएगी और (इसी तरह) आसमान (भी बदल दिए जाएँगे) और सब लोग यकता क़हार (ज़बरदस्त) खुदा के रूबरू (अपनी अपनी जगह से) निकल खड़े होंगे

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ

और तुम उस दिन गुनेहगारों को देखोगे कि ज़ज़ीरों में जकड़े हुए होंगे

سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرَانٍ ۖ وَتَغْشَىٰ وُجُوهُهُمُ النَّارُ

उनके (बदन के) कपड़े क़तरान (तारकोल) के होंगे और उनके चेहरों को आग (हर तरफ से) ढाके होगी

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ ۖ مَا كَسَبَتْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

ताकि खुदा हर शख्स को उसके किए का बदला दे (अच्छा तो अच्छा बुरा तो बुरा) बेशक खुदा बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

هَذَا بَلَّغٌ ۖ لِلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا ۖ بِهِ ۖ وَلِيَعْلَمُوا ۖ أَنَّمَا هُوَ إِلَهٌُ ۖ وَحِدٌ ۖ وَلِيَذَّكَّرَ أُو۟لُوا۟ الْأَلْبَابِ

ये (क़ुरान) लोगों के लिए एक क्रिस्म की इत्तेला (जानकारी) है ताकि लोग उसके ज़रिये से (अज़ाबे खुदा से) डराए जाएं और ताकि ये भी ये यक़ीन जान लें कि बस वही (खुदा) एक माबूद है और ताकि जो लोग अक्ल वाले हैं नसीहत व इबरत हासिल करें